Assignment

Muskan Gharwar
SKt |19|10
B.A Honurs 2nd year
Acting and Script writing

- आभिनय कितने प्रकार के होते है। समझाये।

उत्तर आभिनय के चार प्रकार होते है।

* आङ्गिक
* वाचिक
* सात्विक
* आहार्य

अभिनय के इन्ही प्रकारो का प्रयोग मे सामाजिक को लगता है कि हम वस्तुत: उस जमाने (युग) और परिस्थिति मे पहुँचकर पात्रो के व्यवहारो का अनुभव कर रहे है।

* आङ्गिक आभिनय ⇒ अभिनेताओ के द्वारा हाथ पैर कमर सिर आदि की चेष्टाओ के रूप मे प्रदर्शित किया जाता है। इसके तीन भेद है — (i) शारीरिक, मुखगत और चेष्टाकृत।

Scanned by CamScanner

* वाचिक अभिनय ⇒ इसके अंतर्गत काव्य के गुण, छन्दोविधान, दोष, अलंकार तथा भाषा निहित है। अभिनेताओं के द्वारा नाटक का अंश इसी अभिनय के द्वारा प्रकट होता है। संस्कृत तथा प्राकृत भेदों का विवेचन इसी अभिनय की दृष्टि से किया था। कुछ प्राकृत में शौरसेनी महाराष्ट्री मागधी आदि रूपों का प्रयोग करेंगे।

* सात्विक अभिनय ⇒ जब किसी भाव की अभिव्यक्ति होती है उसे सात्विक अभिनय कहते हैं। शरीर में सत्वगुण की वृद्धि से स्वभावतः जन्म लेने के कारण ये 'सात्विक' गुण या अभिनय कहलाते हैं। जिससे रसोद्भावन में सुविधा होती है।

* आहार्य अभिनय ⇒ किसी व्यक्ति की वेश भूषा की सजावट व पहनावे को आहार्य अभिनय कहते हैं। जिसे भरत ने नेपथ्य-रचना कहा है। इस अभिनय का संबंध रंगमंच से है। क्योंकि इसका विधान नेपथ्य पात्रों में रूप में समझा जाता है। यह अभिनेता की कृत्रिम वेश रचना है। जिससे उसके मूल पात्र के रूप में समझा जाता है। इसके पुस्त अलंकार, अंगरचना और संजीव ये चार प्रकार कहे गये हैं। इस प्रकार

Scanned by CamScanner

Date :
Page No.

अभिनय के विविध पक्षों का निरूपण हुआ है।

संस्कृत नाट्यशास्त्रियों ने रंगमंच की व्यवस्थाय पर विस्तृत विचार किया है। विष्णुधर्मो, तरपुराण आदि ग्रंथों में भी है। नाट्याभिनय को रंगमंच के आकार - प्रकार का विवरण है। नाट्यशास्त्र तो इस विषय का महाकोष ही है।

Scanned by CamScanner